Roll No.....

SDS – 2067

M.A. (IInd Semester)

EXAMINATION, 2022

SANSKRIT

Paper Two

[धर्मशास्त्र]

2½ Hours] [Maximum Marks : 80

इस प्रश्न पत्र में दो खण्ड हैं, खण्ड 'अ' तथा खण्ड 'ब'। दोनों खण्डों से चार-चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। खण्ड 'अ' में लघु उत्तरीय प्रश्न होंगे एवं खण्ड 'ब' में दीर्घ उत्तरीय प्रश्न। सभी

प्रश्नों के उत्तर दी गयी उत्तर पुस्तिका में ही दीजिए। अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका नहीं दी जाएगी।

खण्ड-अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

5 × 4 = 20

1. मनु के अनुसार सृष्टि प्रक्रिया को समझाइए।

2. निम्न श्लोकों की व्याख्या कीजिए।

(क) आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः।।

(ख) अहोरात्रे विभजते सूर्यो मानुषदैविके।
रात्रिः स्वप्नाय भूतानां चेष्टायै कर्मणामहः।।

3. चारों वर्णों के कर्मों का निरूपण कीजिए।

4. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ लिखिए।

(क) प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययन मेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।

(ख) एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।

स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

5. गृहस्थ धर्म का निरूपण याज्ञवल्क्य स्मृति: के अनुसार कीजिए।

6. अधोलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए।

(क) ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजा:।

निषेकाद्या: श्मशानान्तास्तेषां वै मन्त्रत: क्रिया:।।

(छ) यज्ञानां तपसां चैव शुभानां चैव कर्मणाम्।

वेद एवं द्विजातीनां नि:श्रेयसकर: पर:।।

7. निम्न श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

आसुरी द्रविणादानाद्गन्धर्व: समयान्मेथ:।

राक्षसो युद्धहरणात्पैशाच: कन्यकाछलात्।।

8. निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए।

(क) रक्षेत्कन्यां पिता विन्नां पति: पुत्रास्तु वार्धके।

अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्वातन्त्र्यं क्वचित्स्त्रिया:।।

(ख) अन्नं पितृमनुष्येभ्यो देयमप्यन्वहं जलम्।

स्वाध्यायं सततं कुर्यान्न पचेदन्नमात्मने।।

खण्ड-ब

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

4 ×15 = 60

1. मनुस्मृति के अनुसार द्वितीय अध्याय में वर्णित विषय का प्रतिपादन कीजिए।

2. स्मृति ग्रन्थों के वर्ण्य विषय का प्रतिपादन कीजिए।

3. निम्नांकित श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) लोकानां तु विवृद्यर्थं मुखबाहुरुपादत:।

ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्।।

(ख) यदा देवो जागर्ति तदेदं चेष्टते जगत्।

यदा स्वपिति शान्तात्या तदा सर्वं निमी लति।।

(ग) आचार: परमो धर्म: श्रुत्यक्त: स्मार्त एव च।

तस्माद्स्मिन्सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान्द्विज:।।

4. मनुस्मृति के अनुसार विवाह कितने प्रकार के होते हैं विस्तार से समझाइए।

5. आचाराध्याय: के अनुसार सदाचार का वर्णन कीजिए।

6. याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार ब्रह्मचारी के क्या लक्षण होते हैं? उल्लेख कीजिए।

निम्नलिखित श्लोकों के सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(अ) गर्भाष्टमेऽब्दे वाऽब्दे ब्राह्मणस्योपनायनम्।
राज्ञामेकादशे सैके विशामेके यथाकुलम्।।

(ब) ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलंकृता।
तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम्।।

(स) भार्यारतिः शुचिर्भृत्यभर्ता श्राद्धक्रियारतः।
नमस्कारेण मन्त्रेण पञ्चयज्ञान्न हापयेत्।।

याज्ञवल्क्य मतानुसार (स्नातक) पढ़ने वाले विद्यार्थी के कर्तव्य पर प्रकाश डालिए।